• यहां पर...

अकेले बैठे हैं भोलेनाथ

भगवान शिव का बेहद प्रिय सावन का महीना है। आप भी भगवान शिव के अभिषेक, दर्शन और पूजन के लिए शिव मंदिर तो जाते ही होंगे। आपको हरेक मंदिर के गर्भ गृह में बीच में शिवलिंग और पास में ही नंदी के साथ माता पार्वती, गणेश और कार्तिकेय जी भी बैठे मिलेंगे। लेकिन, दुनिया का शायद इकलौता शिव मंदिर वृंदावन में है, जहां भोलेनाथ तो गर्भ गृह में विराजमान हैं और माता पार्वती दरवाजे के बाहर बैठकर उनके बाहर निकलने का इंतजार कर रही हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं, द्वापर युग यानी करीब 5300 साल पहले स्थापित प्रसिद्ध गोपेश्वर महादेव मंदिर की। श्रीमद भागवत महापुराण में इस मंदिर और गोपेश्वर महादेव की महिमा का प्रसंग मिलता है। इस प्रसंग में साफ तौर पर कहा गया है कि वृंदावन में स्थापित यह मंदिर उसी समय का है जब भगवान कृष्ण ने महारास रचाया था। भगवान शिव महारास देखने के लिए यहां आए थे।

इस महारास में भगवान कृष्ण अकेले पुरुष थे, जबकि उनके साथ लाखों गोपियां थीं। भगवान शिव ने भी महारास में घुसने की कोशिश की, लेकिन गोपियों ने उन्हें दरवाजे पर ही रोक दिया। उस समय भगवान शिव ने एक गोपी की ही सलाह पर स्त्री रूप धारण किया, साड़ी पहनी, नाक में बड़ी सी नथुनी पहनी, कानों में बाली पहनी और 16 शृंगार किए। इसके बाद वह महारास में शामिल हो पाए।

भागवत महापुराण के मुताबिक उस समय भगवान शिव पहली बार माता पार्वती को बिना बताए कैलाश से बाहर निकले थे। जैसे

ही इसकी खबर माता पार्वती को हुई, वह भी भगवान शिव का पीछा करते हुए वृंदावन पहुंच गईं। यहां उन्होंने देखा कि बाबा नथुनिया वाली गोपी बने हैं और भगवान कृष्ण के साथ गलबहियां कर रास रचा रहे है। यह देखकर माता पार्वती भी मोहित हो गईं। उन्होंने भी सोचा कि वह भी दर जाकर महारास में शामिल हो जाएं, लेकिन उन्हें डर था कि बाबा तो अंदर जाकर पुरुष से स्त्री बन गए, यदि वह भी स्त्री से पुरुष बन गईं तो क्या होगा। यही सोच कर माता पार्वती बाहर दरवाजे पर ही बैठकर बाबा को बाहर बुलाने के लिए इशारे करने लगीं। उस समय बाबा ने भी साफ कह दिया कि इस रूप में तो अब वह यहीं रहेंगे। तब से भगवान शिव साक्षात गोपेश्वर महादेव के रूप में यहां विराजमान हैं और गर्भगृह के बाहर माता पार्वती उनके इंतजार में बैठी हैं। आज भी समय समय पर बाबा नथुनिया पहन कर गोपी बनते हैं।

• प्रसिद्ध हैं...

ये पांच शिव मंदिर

महाराष्ट्र एक ऐसी जगह है जो अपनी संस्कृति और खाने के लिए तो जानी ही जाती है साथ ही में यह आध्यात्मिक यात्रा करने वालों के लिए भी एक बेहतरीन डेस्टिनेशन है, खासतौर पर अगर आप सावन के महीने में किसी ऐसी जगह की तलाश में हैं जहां पर आप भगवान भोलेनाथ के दर्शन करना चाहते हैं तो महाराष्ट्र आपके लिए एक बढ़िया जगह है। यहां पर कई पवित्र और पुराने शिव मंदिर हैं जहां पर सावन में जाना आपके लिए एक बेहतरीन एक्सपीरियंस होगा।

सावन के दिनों में महाराष्ट्र में भी खूब धूम देखने को मिलती है और भक्त हर तरफ बस भगवान भोलेनाथ का जयघोष करते नजर आते हैं। यहां पर शिव जी के कई ऐसे मंदिर हैं जहां जाकर आपको आध्यात्मिक शांति तो मिलेगी, साथ ही में इन मंदिरों की भव्यता भी देखने लायक है।

▸▸ **त्रयंबकेश्वर मंदिर:** भगवान शिव के भक्तों के लिए ज्योतिर्लिंग के दर्शन करना सौभाग्य की बात होती है, फिलहाल बता दें कि 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र में है, इसलिए सावन में आप यहां की ट्रिप प्लान कर सकते हैं।

▸▸ **भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग:** महाराष्ट्र के पुणे जिले में भी भगवान शिव का एक और ज्योतिर्लिंग भीमाशंकर स्थित है। यह मंदिर सह्याद्रि पर्वत हर है जिसे लोग मोटेश्वर महादेव के नाम से भी जानते हैं। इस ज्योतिर्लिंग के पास से ही भीमा नदी भी होकर गुजरती है। सावन में आप यहां आ सकते हैं।

▸▸ **औंढा नागनाथ मंदिर**- महाराष्ट्र के हिंगोली जिले में मौजूद औंढा नागनाथ मंदिर की काफी ज्यादा मान्यता है। यह मंदिर भी बहुत प्राचीन है। ये मंदिर लगभग 7200 फीट वर्ग के एरिया में फैला हुआ है। इस मंदिर की सुंदर नक्काशी भी आकर्षित करती है।

▸▸ **अंबरनाथ मंदिर:** महाराष्ट्र में भगवान शिव को समर्पित अंबरनाथ मंदिर है, जिसे लोग अंबरेश्वर मंदिर के नाम से भी जानते हैं. इस मंदिर का निर्माण पांडवों के समय का माना जाता है। महाराष्ट्र जाएं तो इस मंदिर में विजिट करना आपके लिए एक अच्छा एक्सपीरियंस रहेगा।

▸▸ **महाबलेश्वर मंदिर :** महाराष्ट्र के सतारा जिले में पश्चिमी घाट पर एक बेहद खूबसूरत जगह है जिसे महाबलेश्वर के नाम से जाना जाता है। यह महाराष्ट्र का सबसे लोकप्रिय डेस्टिनेशन है। इसकी वजह है यहां के हरे-भरे जंगल, खूबसूरत पहाड़, घाटियां और झरने। इसके अलावा यहां अगर पर्यटकों के सबसे ज्यादा अगर कुछ लुभाता है तो वो है महाबलेश्वर शिव मंदिर।

भगवान शिव के सिर पर चंद्रमा

शिव पुराण के अनुसार, जब अमृत प्राप्त करने के लिए देवताओं और असुरों में समुद्र मंथन हुआ, तब इस मंथन में से अमृत के साथ साथ अत्यंत जहरीला विष भी निकला था, जो संपूर्ण सृष्टि को नष्ट करने में सक्षम था।

इस विष से सृष्टि की रक्षा करने के लिए भगवान शिव ने स्वयं इस विष को अपने कंठ में ग्रहण कर लिया था। विष के अत्यंत जहरीले होने के कारण भगवान शिव के शरीर का तापमान अत्यधिक गर्म होने लगा...

हिंदू धर्म के सभी देवताओं में भगवान शिव ही एक ऐसे अनोखे देवता हैं, जिनका शृंगार सबसे अलग और अद्भुत होता है। भोलेनाथ अपने शरीर पर भस्म, नाग, रुद्राक्ष, बाघ चर्म, जटा और अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण करते हैं। भगवान शिव के द्वारा अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण करने का एक अलग ही रहस्य है। चंद्रमा को धारण करना बहुत सी चीजों का प्रतीक भी माना जाता है। भगवान शिव अपने मस्तक पर चंद्रमा को क्यों धारण करते हैं, इसका वर्णन कुछ पौराणिक कथाओं में किया गया हैद्ध

भगवान शिव के द्वारा अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण करने के पीछे का कारण कई पौराणिक कथाओं में बताया गया है। इन सब कथाओं में 2 पौराणिक कथा सबसे ज्यादा प्रचलित हैं। पहली पौराणिक कथा का जिक्र शिव पुराण में किया गया है।

शिव पुराण के अनुसार, जब अमृत प्राप्त करने के लिए देवताओं और असुरों में समुद्र मंथन हुआ, तब इस मंथन में से अमृत के साथ साथ अत्यंत जहरीला विष भी निकला था, जो संपूर्ण सृष्टि को नष्ट करने में सक्षम था। इस विष से सृष्टि की रक्षा करने के लिए भगवान शिव ने स्वयं इस विष को अपने कंठ में ग्रहण कर लिया था। विष के अत्यंत जहरीले होने के कारण भगवान शिव के शरीर का तापमान अत्यधिक गर्म होने लगा और उनका कंठ विष के प्रभाव से नीला पड़ गया। इसी कारण भगवान शिव को नीलकंठ के नाम से भी जाना जाता है।

विष के प्रभाव के कारण भगवान शिव का शरीर अत्याधिक गर्म होता जा रहा था। तब चंद्रदेव के साथ साथ अन्य देवी-देवताओं ने भगवान शिव से प्रार्थना करी कि वें अपने शरीर के तापमान को सामान्य करने के लिए अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण करें। क्योंकि चंद्रमा का स्वभाव शीतलता प्रदान करने वाला होता है। चंद्रमा को धारण करने से भगवान शिव के शरीर में शीतलता बनी रहेगी। तब भगवान शिव ने सभी देवी-देवताओं के अनुरोध पर अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण किया। माना जाता है कि तभी से भगवान शिव के मस्तक पर चंद्रमा विराजमान हैं।

एक अन्य पौराणिक कथा : एक और कथा के अनुसार, दक्ष प्रजापति की 27 कन्याएं थीं, जिनका विवाह चंद्रदेव (चंद्रमा) के साथ हुआ था। लेकिन चंद्रमा केवल रोहिणी को ही अधिक प्रेम करते थे, और अन्य पत्नियों की उपेक्षा करते थे। इस कारण अन्य पत्नियां दुखी होकर अपने पिता दक्ष प्रजापति के पास गईं। दक्ष प्रजापति को अपनी बाकी 26 पुत्रियों के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ। तब उन्होंने चंद्रदेव को समझाया, लेकिन चंद्रदेव के स्वभाव पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

तब दक्ष प्रजापति ने चंद्रदेव को श्राप दिया कि वे धीरे-धीरे क्षीण हो जाएंगे। श्राप से बचने के लिए चंद्रदेव ने भगवान शिव की आराधना की और उनसे श्राप से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की। तब भगवान शिव ने चंद्रमा को श्राप से मुक्ति दिलाने के लिए उनको अपने मस्तक पर धारण कर लिया। मान्यता है कि दक्ष प्रजापति के श्राप के प्रभाव से ही चंद्रमा क्षीण हो जाते हैं, लेकिन भगवान शिव के आशीर्वाद के कारण बाद में पुन: पूर्ण हो जाते हैं।

भगवान शिव के चंद्रमा को धारण करने के अन्य प्रतीकात्मक अर्थ

● **शीतलता और शांति का प्रतीक**-चंद्रमा शीतलता और शांति का प्रतीक है। यह भगवान शिव की दयालुता और क्षमाशीलता का प्रतिनिधित्व करता है, जो क्रोध, सर्जन और संहार के देवता होने के बावजूद, सदैव शांत और संयमित रहते हैं

● **ज्ञान और विद्या का प्रतीक**-चंद्रमा ज्ञान और विद्या का भी प्रतीक है। भगवान शिव को ज्ञान और विद्या के देवता के रूप में भी जाना जाता है। उनके मस्तक पर विराजमान चंद्रमा उनके इस स्वरूप को दर्शाता है।

● **सौंदर्य और कला का प्रतीक** -चंद्रमा सौंदर्य और कला का भी प्रतीक माना जाता है. भगवान शिव को अर्धनारीश्वर के रूप में भी पूजा जाता है, जो पुरुष और स्त्री दोनों तत्वों का प्रतीक है। चंद्रमा इस अर्धनारीश्वर रूप की सुंदरता को दर्शाता है।

● **जन्म-मरण के चक्र का प्रतीक**-चंद्रमा जन्म-मरण के चक्र का भी प्रतीक होता है. चंद्रमा का निरंतर बदलते रहना जीवन-मृत्यु, जन्म-मरण के चक्र को दर्शाता है. भगवान शिव को सृष्टि, पालन और संहार के देवता के रूप में जाना जाता है, चंद्रमा इस चक्र का दर्शाने का प्रतीक माना जाता है.

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• संकट...

सावन में क्या ना करें

ग्रंथों के अनुसार सावन के महीने में जो भी भक्त श्रद्धा और भाव से भोलेनाथ और माता पार्वती की विधि पूर्वक उपासना करते हैं उन्हें जीवन में कभी संकटों का सामना नहीं करना पड़ता। हिंदू धर्म में सावन के महीने को काफी पवित्र माना जाता है भोलेनाथ के प्रिय महीने को लेकर कई नियम बताए गए हैं। इनका पालन जरूर करना चाहिए, नहीं तो जीवन में धनहानि, आर्थिक संकट और मानसिक परेशानियां होने लगती है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सावन में बुधवार और गुरुवार के दिन उधार देना-लेना अच्छा नहीं माना जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से व्यक्ति धन संकट में घिर जाता है। कर्ज का बोझ बढ़ जाता है। उधार लेने वाले पैसों को चुकान में असमर्थ हो जाते हैं। जीवन में पैसों की परेशानी होने लग जाती है। शिव पूजा में हल्दी, तुलसी, कुमकुम, और केतकी का फूल शामिल न करें। इस माह मदिरा का सेवन गलती से भी न करें, तामसिक भोजन मांस, लहसुन और प्याज खाने से बचें। किसी के बारे में गलत बातें न बोलें, किसी के साथ गलत व्यवहार करने से बचें। सावन में दूध नहीं पीना चाहिए, साथ ही पत्तेदार सब्जियां नहीं खानी चाहिए।

• पार्थिव शिवलिंग...

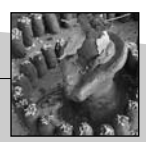

सावन माह माह में धार्मिक कार्यों और भगवान शिव के प्रति भक्ति, पूजा और विशेष समर्पण विशेष महत्व होता है। अगर ऐसे में कोई भक्त पूरी श्रद्धा और भाव से भगवान शिव के पार्थिव शिवलिंग का निर्माण करता है, तो भोलेनाथ उसकी सभी इच्छाओं को पूरा कर देते हैं। पार्थिव शिवलिंग का अर्थ होता है मिट्टी से बना हुआ शिवलिंग। यह पूजा शिवलिंग की शुद्धता और साकारता को दर्शाती है और शिव भक्ति में अधिक साकार अनुभव कराती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित